Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति और आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 यज्ञेश कुमार

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शासकीय आदर्श महाविद्यालय छतरपुर

Article Info: *(Recieved- 04/03/2026, Accept- 09/04/2026, Published- 10/05/2026)*
DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i5006

सारांश–

यह शोध–पत्र प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा–पद्धति तथा आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नालंदा की शिक्षण संरचना, पाठ्यक्रम, शोध–परक दृष्टिकोण, विद्यार्थी–अनुभव तथा विद्वतापरिषद् की भूमिका का विश्लेषण करते हुए आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली के साथ उसकी समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट करना है। शोध में यह पाया गया कि नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली गुरु–शिष्य परंपरा, संवादात्मक शिक्षण, नैतिक मूल्यों एवं स्वतंत्र चिंतन पर आधारित थी, जबकि आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली तकनीकी संसाधनों, संरचित पाठ्यक्रम, डिजिटल शिक्षण और वैश्विक मानकीकरण पर अधिक केंद्रित है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि नालंदा में शोध एवं अकादमिक स्वतंत्रता को विशेष महत्त्व दिया जाता था, जो आज की शोध–आधारित विश्वविद्यालय प्रणाली के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकता है। आधुनिक शिक्षा में समावेशन, बहुभाषिकता, डिजिटलीकरण तथा दूरस्थ शिक्षा जैसे आयामों का विस्तार हुआ है, किंतु नालंदा मॉडल की नैतिकता, ज्ञान–संवाद और समग्र व्यक्तित्व निर्माण की अवधारणा आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। निष्कर्षतः, यह अध्ययन बताता है कि प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के समन्वय से एक अधिक समावेशी, शोधपरक एवं मूल्य–आधारित शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सकती है।

कुंजी शब्द– नालंदा विश्वविद्यालय, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली, शिक्षण–पद्धति, गुरु–शिष्य परंपरा, शोध–परक शिक्षा, अकादमिक स्वतंत्रता, समावेशन, डिजिटलीकरण, बहुभाषिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, नैतिक मूल्य, तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

प्रस्तावना के अंतर्गत हम इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य नालंदा विश्वविद्यालय की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण करना है, जिससे उसकी शिक्षाशैली की विशिष्टताओं एवं अद्वितीयताओं का उद्घाटन किया जा सके। यह प्रयास आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधारभूत आधार का निर्माण करता है, जिनमें विशेषतः शिक्षण–पद्धतियों, शोध–संरचनाओं और विद्यार्थियों के अनुभवों का समावेश है। इतिहास के संदर्भ में नालंदा का शिक्षण तंत्र अत्यंत विकसित एवं संपूर्ण था, जिसमें विद्वान पर्यवेक्षक, विशेषज्ञ शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच संवाद का घनीभूत तंत्र स्थापित था। यहाँ पाठ्यक्रम अधिकतर तुलनात्मक और संवादात्मक शिक्षण विधियों पर आधारित था, जिसमें अध्ययन के विविध पहलुओं का समन्वय था। साथ ही, शोध कक्षाओं एवं विद्वान परिषदों का समुचित संचालन विद्यार्थियों को शोध और नए विचारों के विकास में सहायता प्रदान करता था। विद्यार्थियों का अनुभव तथा शिक्षण संस्कृति का विश्लेषण इस तथ्य को उजागर करता है कि नालंदा में अध्ययन का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन ही नहीं था, बल्कि इसकी बुनियाद सामाजिक एवं नैतिक परंपराओं पर भी थी। इन आयामों से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि तत्कालीन प्रणाली छात्रों को योग्य और आदर्श

मानव बनाने में समर्थ थी। तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि इन प्राचीन प्रणालियों की बुनियादी संरचना, शिक्षण विधियां और शोध–संरचना आधुनिक मानकों के अनुरूप कैसे विकसित की जा सकें, यह समझना भी प्रक्रिया का एक अनिवार्य भाग है। इस अध्ययन का लक्ष्य केवल रचनात्मक तुलना प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि इन प्रणालियों के बीच विद्यमान सामंजस्य और अंतर्विरोधों को समझकर उनके समकालीन प्रासंगिकता का परिचर्चा करना है। अतः प्रस्तावना का यह भाग न केवल ऐतिहासिक संदर्भ की स्थापना करता है, बल्कि दोनों प्रणालियों के बीच संवाद की बैठक भी स्थापित करता है, जिससे ज्ञान की धारा का सतत् प्रवाह सुनिश्चित हो सके।

2. नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षण–पद्धतिरू ऐतिहासिक संदर्भ

नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षण–पद्धति का इतिहास प्राचीन भारत की उच्च शिक्षण परंपरा में अत्यंत समृद्ध है। यह विश्वविद्यालय, अपने समय की शैक्षणिक संस्थान के रूप में, ज्ञान के सृजन और प्रसार का केंद्र था। इसकी शिक्षण–पद्धति विशिष्ट रूप से आत्म–अनुशासन, गहन अध्ययन और संवाद पर आधारित थी। यहाँ विद्यार्थियों को गहन दृष्टिकोण से विचार–विमर्श की स्वतंत्रता दी जाती थी, जिससे उनके चिंतन एवं तर्क कौशल का विकास होता था। पाठ्यक्रम में दर्शन, विद्या, विज्ञान एवं कला सभी आवश्यक अंग शामिल थे, ताकि छात्रों को बहुमुखी ज्ञान प्राप्त हो सके। शिक्षण प्रक्रिया में गुरु–शिष्य परंपरा का महत्व था, जिसमें गुरुओं का मार्गदर्शन एवं विद्यार्थियों का सक्रिय भागीदारी दोनों महत्वपूर्ण थे। इसके साथ ही, विद्यापीठ में विद्वतापरिषद् की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती थी, जो न केवल पाठ्यक्रम निर्धारण एवं मूल्यांकन की जिम्मेदारी निभाती थी, बल्कि शोध और नवाचार को भी प्रोत्साहित करती थी।

शिक्षण की इन विशेषताओं के पीछे लोकभाषाओं में संवाद और सतत संशोधन की परंपरा देखने को मिलती है, जो उस काल की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप थी। इस प्रणाली में विद्यार्थी का अनुभव अत्यंत व्यक्तिगत और संवादी था, जिससे सीखने की प्रक्रिया छात्र–केंद्रित एवं परंपरागत मान्यताओं से मुक्त होकर जीवनमूल्य पर आधारित थी। इसके माध्यम से, नालंदा विश्वविद्यालय ने न केवल पदवी–प्राप्ति का माध्यम प्रदान किया, बल्कि समाज में व्यावहारिक ज्ञान, नैतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी का आचार भी विकसित किया। इस शिक्षण–संस्था का यह मॉडल अपनी व्यापकता, गहराई और स्थिरता के कारण विद्यापीठ की शैक्षणिक उत्कृष्टता का प्रतीक बन गया, जिसकी प्रभावशाली शिक्षण–पद्धति आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली के अध्ययन के लिए एक अमूल्य संदर्भ प्रस्तुत करती है।

2.1. पाठयक्रम और शिक्षण प्रक्रियाएँ

नालंदा विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम एवं शिक्षण प्रक्रियाएँ सकती विविधता और विशिष्टता का प्रतिबिंब थीं। इस प्राचीन विद्यापीठ में अध्ययन का आधार मुख्य रूप से ग्रंथों का अध्ययन, संवाद और श्रवण पर था, जिसमें शिक्षकों का दायित्व विद्यार्थियों की समझदारी तथा चिंतनशीलता को विकसित करना था। पाठ्यक्रमों का आयोजन प्रमुख ग्रंथों और शास्त्रों के आधार पर होता था, जिनमें बौद्ध, जैन, ब्राह्मण तथा जैन शास्त्र शामिल थे। शिक्षण का तरीका मुख्य रूप से मौखिक चर्चा, प्रश्नोत्तर और संवादपरक था, जिससे विद्यार्थियों के अंतर्दृष्टि और तर्क शक्ति का विकास होता था। संवाद और प्रश्नोत्तरी का अभ्यास विद्यार्थियों के विचाराधारा एवं वाक् कौशल को उन्नत करता था।

इस प्रणाली में शिक्षण का स्वरूप पारंपरिक परंपराओं, अनुभव और गुरु–शिष्य संबंधों पर केंद्रित था, जहां शिक्षक अनुभव और ज्ञान के स्रोत के रूप में कार्य करते थे। व्याख्यान एवं संवाद की प्रक्रिया में शिक्षक अपने अनुभव, नेतृत्व तथा विज्ञान सम्मत विवेचन को विद्यार्थियों तक पहुँचाते थे। इस पद्धति में पाठ्यक्रम लचीला एवं विद्यार्थियों की रुचि व आवश्यकताओं के अनुसार बदला जा सकता था, जिससे व्यक्तिगत शिक्षण पर बल दिया जाता था। इसके साथ ही, शिक्षण का उद्देश्य न केवल ज्ञान का संचयन था, बल्कि तर्क, संवाद और चिंतन के माध्यम से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास भी सुनिश्चित किया जाता था।

आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में, जबकि विभिन्न संसाधनों, तकनीकों एवं नवाचारों का प्रयोग किया जाता है, फिर भी शिक्षण प्रक्रियाओं में बहुतायत विविधता और स्वतंत्रता पाई जाती है। पाठ्यक्रम संरचित, मानकीकृत और समय–सारणीबद्ध होते हैं, जिनमें मिश्रित शिक्षण विधियोंकृजैसे कि क्लासरूम व्याख्यान, ऑनलाइन शिक्षण, वर्कशॉप, सेमिनार और प्रयोगशाला कार्यान्वित होते हैं। मूल्यांकन भी बहुआयामी और समग्र होता है, जिसमें परीक्षा, परियोजना, प्रस्तुतियाँ और निरंतर मूल्यांकन शामिल हैं, ताकि विद्यार्थियों के समग्र विकास का आकलन किया जा सके। शोध एवं स्वतंत्रता की स्वतंत्रता विश्वविद्यालय के प्राथमिक उद्देश्य मानी जाती है, जहां विद्यार्थियों और संकायों को नए ज्ञान की खोज का प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रणाली में तकनीक का समावेश, बहुभाषिकता, तथा विविध शिक्षण माध्यम विद्यार्थियों को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने

में सहायता करते हैं, जिससे उनकी संप्रेषणीयता, समावेशन और नवाचार क्षमता का विकास होता है।

2.2. विद्वतापरिषद् और शोधकेंद्र

विद्वतापरिषद् और शोधकेंद्र नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना का अभिन्न भाग माने जाते हैं, जिन्होंने छात्रों और अध्यापकों के बीच संवाद एवं अनुसंधान की समर्पित व्यवस्था स्थापित की। यहाँ की विद्वतापरिषद् उच्च कोटि के ब्रह्मज्ञानों एवं अनुभवी आचार्यों की समिति थी, जो न केवल शैक्षणिक नीति निर्धारण का कार्य करती थी, बल्कि शोधकार्य एवं शिक्षण की गुणवत्ता का भी संरक्षण सुनिश्चित करती थी। परिषद् का गठन बहुमुखी विद्वानों से होता था, जिनकी विशेषज्ञता विविध शाखाओं में थी। इनकी भूमिका सतत समीक्षा, नीति निर्माण और शिक्षण सामग्री का निर्धारितकरण कर उसकी प्रभावशीलता सुनिश्चित करना था।

शोधकेंद्र भी इस प्रणाली का अद्वितीय अंग था, जहाँ मूलतः नैतिकता, वैदिक एवं तांत्रिक ग्रंथों का अध्ययन, मौलिक शोध एवं विशेषज्ञता का विकास होता था। यहाँ पर ऐसे अनुसंधान–आधारित कार्यों को प्राथमिकता दी गई जो तत्कालीन काल में ज्ञान के नए स्रोत प्रदान करते। शोधकेंद्र न केवल विद्वानों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान का मंच था, बल्कि यह नवाचार और ज्ञान का प्रसार भी करता था। इन केंद्रों का उद्देश्य परंपरागत विद्या के संरक्षण के साथ–साथ नवीनतम शोध के लिए वातावरण तैयार करना था।

इस संरचना ने नालंदा विश्वविद्यालय को अपने समय की विशिष्ट अकादमिक संस्था बनाया। ख्यातिप्राप्त विद्वानों का यह मंडल न केवल शिक्षण, बल्कि शोध और संवाद का पर्यावरण भी प्रदान करता था। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणालियों के संदर्भ में, नालंदा की इन व्यवस्थाओं को साझा उद्देश्य, विशेषज्ञता और समर्पित शोध केंद्र की दृष्टि से देखा जा सकता है, जो शिक्षण और अनुसंधान के स्थायी आधारभूत ढांचे का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रणाली आधुनिक विश्वविद्यालयों के निदान तथा सुधार की दिशा में कार्य करते हुए, शिक्षा एवं शोध के समकालीन आयामों को भी संबोधित करने में प्रेरणा स्त्रोत सिद्ध हो सकती है।

2.3. विद्यार्थी–अनुभव और शैक्षणिक संस्कृति

विद्यार्थी–अनुभव और शैक्षणिक संस्कृति का निम्न स्तर व्यक्ति के समग्र विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। नालंदा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का जीवनशैली एवं शिक्षण प्रक्रियाओं का समेकित अनुभव अत्यंत प्रभावशाली था, जो प्रेमपूर्ण संवाद, परस्पर सम्मान, और सीखने के प्रति जागरूकता पर आधारित था। यहाँ, अध्ययन का मुख्य उद्देश्य न केवल सूचनाओं का संचय था, बल्कि विचारधारा निर्माण और नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन भी था। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच का आत्मीय संबंध एवं गुरु–शिष्य परंपरा एक समर्पित एवं प्रेरणादायक शैक्षणिक संस्कृति का आधार था, जो विद्यार्थियों में स्वाधीनता, अनुशासन और सामाजिक जागरूकता का बीजारोपण करता था।

वर्तमान विश्वविद्यालय प्रणाली में विद्यार्थियों का अनुभव विविध एवं जटिल हो गया है। एक ओर, पाठ्यक्रम संरचनाएँ अधिक अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित की जा रही हैं, जो बहुस्तरीय विकल्प एवं तकनीकी संसाधन उपलब्ध कराती हैं, वहीं दूसरी ओर, प्रतिस्पर्धा एवं प्रौद्योगिकी का प्रभाव विद्यार्थियों के अनुभव पर अंकुश लगाता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का जीवनशैली अधिक गतिशील एवं तर्कसंगत है, जिसमें सीखने का क्षेत्र अधिक व्यक्तिगत, स्वरूपगत और डिजिटल–आधारित हो गया है। इसके परिणामस्वरूप, शैक्षणिक संस्कृति में एक परिवर्तन दिखता है, जिसमें सहकार्य, नवाचार और बहुभाषिकता को महत्त्व दिया जाता है।

अधिकांश आधुनिक विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को संवेदी एवं वृत्तात्मक अनुभव प्रदान करने का प्रयास करते हैं। यह न केवल ज्ञान अर्जन में सहायक है, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी का भी विकास करता है। छात्रावलोकन एवं संवाद का महत्व बढ़ने के साथ, विद्यार्थियों को विविध संस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी परिप्रेक्ष्यों में सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इसके अलावा, शिक्षा का अनुभव उन्हें सामाजिक समावेशन, नेतृत्व कौशल और विस्तारित नेटवर्किंग का मंच उपलब्ध कराता है। अतः, विद्यार्थियों का अनुभव और शैक्षणिक संस्कृति दोनों ही शैक्षणिक संस्थान की गुणवत्ता और दीर्घकालिक सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण आधार हैं, जिनमें पारंपरिक मूल्यों एवं आधुनिक आवश्यकताओं का संतुलित समन्वय आवश्यक है।

3. आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणालीः वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली विविध संरचनात्मक मॉडल, शैक्षणिक प्रक्रियाएँ और मूल्यांकन विधियों का समागम दर्शाती है। विश्वभर में विश्वविद्यालयों की स्थापित प्रणाली मानव संसाधन विकास, नवाचार एवं सामाजिक समावेशन के उद्देश्यों को समेटे हुए हैं। इन संस्थानों का उद्देश्य ज्ञान का सृजन, प्रसार और व्यावहारिक उपयोग सुनिश्चित करना है। विश्व स्तर पर विविध पाठ्यक्रम, विविध भाषाई माध्यमों एवं

डिजिटलीकरण के माध्यम से शिक्षा तक पहुँच बढ़ाई जा रही है, जिनके द्वारा छात्र–समुदाय का आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जाता है। भारतीय संदर्भ में भी, आधुनिक विश्वविद्यालयों में शोध, शिक्षा एवं सामाजिक समावेशन पर बल दिया जाता है। भारत में विश्वविद्यालयों की संरचना अधिक व्यापक और विविध मानी जाती है, जहाँ बहुमुखी अनुसंधान, बहुभाषिकता और ऐतिहासिक परंपराएँ शिक्षा प्रणाली का आधार हैं। मूल्यांकन तंत्र में अब अधिक फोकस शोध गुणवत्ता और व्यावहारिक ज्ञान पर है, जबकि छात्र–समर्थन और सामाजिक समावेशन के प्रयास निरंतर बढ़ रहे हैं। नई तकनीकों और वैश्विक मानकों के समावेश से यह प्रणाली अधिक गतिशील और प्रतिस्पर्धी बन गई है। इस संदर्भ में, नालंदा के शिक्षा मॉडल का अध्ययन उस समय की विद्वत्ता और शैक्षणिक परंपराओं को आधुनिकता के साथ जोड़ने का एक प्रासंगिक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

3.1. संरचना, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन

नालंदा विश्वविद्यालय की संरचना, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणाली अत्यंत व्यापक एवं सुव्यवस्थित थी। इसकी संरचना मुख्यतः गुरुकुलीन परंपरा पर आधारित थी, जहाँ विद्वानों और छात्रों का समूह मिलकर अध्ययन करता था। यहाँ का शिक्षण केन्द्रिकृत स्वरूप विद्वानों के शैक्षणिक एवं नैतिक दिशानिर्देश पर आधारित था, जिसमें प्रत्येक विषय के विशेषज्ञ शिक्षक रहते थे। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु विभिन्न विद्वान् के अनुभव एवं परंपराओं से संचालित थी, तथा इसमें समारोह एवं नैतिक शिक्षा का भी समावेश था। पाठ्यक्रम का स्वरूप प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन, नैतिक सिद्धांत एवं व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने पर केंद्रित था।

मूल्यांकन के संदर्भ में, नालंदा में छात्र की योग्यता का मापन मुख्य रूप से मौखिक परीक्षा, श्रीवृक्ष रजिस्टर एवं शिक्षक के निरीक्षण के आधार पर होता था। मूल्यांकन का उद्देश्य छात्र की समग्र प्रतिभा एवं नैतिक विकास का आकलन करना था, न कि सिर्फ परीक्षा परिणाम। इस प्रणाली में स्वतंत्रता एवं अनुसंधान का कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं था, बल्कि यह शिक्षा पूर्णतया शिक्षक–केंद्रित एवं पारंपरिक था। इस संरचना में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का समावेश लगभग स्वाभाविक था, ताकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो सके।

आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली के अपेक्षा में, संरचना में विशेष रूप से प्रशासनिक स्वतंत्रता, अकादमिक विभागों का वर्गीकरण एवं अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना शामिल है। पाठ्यक्रम भी अधिक विविध एवं संशोधित, नवीन अध्ययन विधियों एवं तकनीकों के साथ विकसित हो चुके हैं। मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं, निरंतर मूल्यांकन और प्रोजेक्ट आधारित कार्ययोजनाओं का प्रयोग बढ़ गया है। इस प्रणाली में विद्यार्थी को विशेषज्ञता प्राप्त करने, अनुसंधान करने तथा व्यावहारिक कौशल विकसित करने का अवसर मिलता है, जिससे शिक्षा का स्तर अधिक संवादात्मक एवं समावेशी बनता है। इन दोनों प्रणालियों के बीच मुख्यतः संरचना का विकेन्द्रीकरण, पाठ्यक्रम विकास में नवाचार और मूल्यांकन के तरीकों में परिवर्तन का अंतर है, जो विभिन्न आवश्यकताओं एवं सामाजिक अपेक्षाओं को सूट करता है।

3.2. शोध–परक संरचना और अकादमिक स्वतंत्रता

शोध–परक संरचना और अकादमिक स्वतंत्रता का आयाम नालंदा विश्वविद्यालय की परंपरागत कार्यपद्धति में विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ शोध कार्यों का प्रोत्साहन प्रमुख था, जिसमें विद्वानों को स्वायत्तता प्राप्त थी कि वे अपनी अनुसंधान गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से संचालित कर सकें। इस स्वतंत्रता का आधार दर्शन था कि ज्ञान के विस्तार हेतु स्वतंत्र विचार और समर्पित अनुसंधान आवश्यक हैं। नालंदा की शिक्षण प्रणाली में गुरुओं की श्रेष्ठता और विद्वानों का स्वायत्त निर्णय केन्द्रस्थ था, जो छात्रों को स्वतंत्रता के साथ अध्ययन और शोध की दिशा में प्रवृत्त करता था। यहाँ, शिक्षकों का स्वतंत्रता का अर्थ था कि वे अपने अनुसंधान का स्वरूप, विधि और दिशा स्वयं निर्धारित कर सकते थे, जिससे बौद्धिक विविधता और नवाचार का वातावरण बनता था। इसके विपरीत, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में भी शोध–परक संरचना विशेष महत्व रखती है, लेकिन यह 'आधिकारिक मानकों' और 'उद्योगिक मानदंडों' से बंधी होती है। इन संरचनाओं के अंतर्गत शोध की दिशा–नीति, वित्त पोषण, और अनुसंधान मानकों का निर्धारण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, जिससे स्वायत्तता का स्तर सीमित हो सकता है।

फिर भी, आधुनिक प्रणाली में शोध की योजना बनाना और उसकी गुणवत्ता प्रतिबंधितर्ताओं के अधीन रहते हुए भी, अकादमिक स्वतंत्रता का संरक्षण निरंतर आवश्यक है। यह स्वतंत्रता न केवल नए विचारों के विकास के लिए जरूरी है, बल्कि लंबी अवधि में विश्वविद्यालय के शोध क्षमताओं को सशक्त भी बनाती है। नालंदा की परंपरा में गुरु और शिष्य के बीच गहरा संबंध स्वतंत्रता की भावना को विकसित करता था, वहीं आधुनिक विश्वविद्यालय में श्रेष्ठतम अनुसन्धान के लिए बाह्य निरीक्षण, मानक, और नैतिक निर्देश आवश्यक हो जाते हैं। इस प्रकार, दोनों प्रणालियों में शोध–परक संरचना और अकादमिक स्वतंत्रता का अपना अपना स्वरूप है, लेकिन दोनों का उद्देश्य ज्ञान का विस्तार और अनुसंधान की उत्कृष्टता सुनिश्चित करना है।

3.3. समकक्षता, पहुँच और समावेशन

समकक्षता, पहुँच और समावेशन अवधारणाएँ आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली की आधारभूत आवश्यकताएँ हैं, जो शिक्षा के संसाधनों और अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करने पर बल देती हैं। वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालय प्रणाली इन आदर्शों को पूरा करने के प्रयास कर रही हैं, ताकि विविध सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जा सकें। इस संदर्भ में, प्रशासनिक नीतियों और पाठ्यक्रम व्यवस्था में बदलाव आवश्यक हो जाते हैं, ताकि शैक्षणिक सजगता और विविधता को सुविधाजनक बनाया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो, विश्वविद्यालयों ने पहुँच और समावेशन को प्राथमिकता देते हुए वित्तीय सहायता, छात्रवृत्तियां और लचीले अध्ययन विकल्प शुरू किए हैं। इन पहलों का उद्देश्य वंचित वर्गों तक शिक्षा का विस्तार करना और उन्हें उच्च शिक्षा में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। भारतीय संदर्भ में भी, सरकार एवं शैक्षणिक संस्थान विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों की सहायता कर रहे हैं, जैसे अल्पसंख्यक एवं अनुसूचित जाति–जनजाति छात्रवृत्ति योजनाएँ।

विद्यार्थियों के समान अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए शैक्षणिक जगत ने शैक्षणिक विलक्षणताओं को स्वीकारते हुए बहुभाषिक शिक्षा, डिजिटल संसाधनों और समावेशी शिक्षण पद्धति का अनुसरण किया है। इन प्रयासों से शिक्षा का गुणवत्ता स्तर बढ़ाने और सामाजिक विविधता का सम्मान करने का लक्ष्य साध्य हुआ है। इसके साथ ही, विश्वविद्यालयों का प्रयास है कि शैक्षणिक आकर्षण एवं शोध के क्षेत्र में भी सभी वर्ग के विद्यार्थियों को समान प्रतिनिधित्व मिले। इस क्रम में, नालंदा जैसे प्राचीन शिक्षण संस्थानों का आदर्श विस्तृत समाज के समावेशन और समानता की भावना को पुनः जागरूक करने में मददगार हो सकता है।

कुल मिलाकर, समक्षता, पहुँच और समावेशन की दिशा में निरंतर समर्पित प्रयास न केवल शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करते हैं, बल्कि एक समरस समाज की रचना में आधारभूत भूमिका निभाते हैं। इन मानकों को स्थापित करने के लिए सरकारी नीतियों, संस्थागत प्रतिबद्धताओं और शिक्षण प्रणालियों में निरंतर सुधार आवश्यक है, ताकि शिक्षाप्राप्ति के अवसरें अधिक से अधिक विशिष्ट और बहुआयामी हो सकें।

4. तुलनात्मक विश्लेषणः संरचना, शिक्षा शास्त्र, मूल्यांकन, और शोध–परिपूर्णता

नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षण–पद्धति एवं आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण करते समय उनके संरचनात्मक विभिन्नताओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। नालंदा में शिक्षा का केंद्र बिंदु गुरु–शिष्य परंपरा और सामूहिक अध्ययन था, जिसमें विद्वानों की परिषद् (विद्वतापरिषद्) व्यवस्था से शोध और चर्चा कार्य संचालित होते थे। इसके विपरीत, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में शिक्षण संरचना अधिक औपचारिक एवं स्वतंत्र है, जिसमें डिस्टेंस शिक्षा, लैब अभ्यास और क्लासरूम अधिान महत्वपूर्ण हैं।

मूल्यांकन की प्रणाली भी भिन्न है। नालंदा में पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा के तहत गुरु का आकलन प्रमुख था, जिसमें नैतिकता और आचरण का भी मूल्यांकन शामिल था। आधुनिक विश्वविद्यालय में डिजिटल मूल्यांकन, लिखित परीक्षाएँ एवं परियोजना आधारित आकलन का प्रचलन है, जो अधिक विस्तृत एवं विविधता वाले मापदंड प्रदान करता है।

4.1. तंत्र–आधारित तुलना

नालंदा विश्वविद्यालय की तंत्र–आधारित शिक्षण–पद्धति और आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणालियों के बीच मुख्य भिन्नता उनके तंत्रिकी ढांचे एवं कार्यप्रणाली में निहित है। नालंदा में शिक्षण का आधार प्राचीन ग्रंथों एवं शिक्षाशास्त्र पर आधारित था, जहां शिक्षक और विद्वान वर्ग मुख्य भूमिका में थे। उनका कार्यकेंद्रित शैक्षणिक तंत्र व्यक्तिगत बातचीत, मौखिक परीक्षा और श्रवणात्मक शिक्षण पर निर्भर था, जिससे विद्यार्थियों को गहरी समझ विकसित करने का अवसर मिलता था। इसके विपरीत, आधुनिक विश्वविद्यालयों में, शिक्षण के लिए डिजिटल उपकरण, विस्तृत पाठ्यक्रम और तकनीकी संसाधनों का प्रयोग होता है। पारंपरिक तंत्रिक दृष्टिकोण में शिक्षकों का प्राथमिक स्थान व्यक्तिगत मार्गदर्शन का था, जबकि आधुनिक प्रणाली में शिक्षकों का कार्य शिक्षण, शोध और प्रशासन का समेकित समन्वय है।

तंत्र के संदर्भ में, नालंदा की प्रणाली अधिक केंद्रीकृत और परंपरागत थी, जिसमें विशिष्ट वर्ग–संबंधित शिक्षण तंत्र कार्यरत था। आधुनिक प्रणाली में, स्वतंत्रता, बहुआयामी शिक्षण विधियों और स्वायत्त शिक्षण संस्थानों की स्थापना का महत्त्व है। दोनों प्रणालियों में मानक एवं मूल्यांकन तंत्र विभिन्न हैं। नालंदा में लेखन और मौखिक परीक्षाएँ प्रमुख थीं, जबकि आधुनिक विश्वविद्यालयों में टेस्ट, प्रोजेक्ट, ग्रुप डिस्कशन और तकनीकी मूल्यांकन का प्रयोग होता है। शोध की दृष्टि से, नालंदा में विद्वान और परिषद् विशेष रूप से निर्णायक भूमिका निभाते थे,

जिससे अनुसंधान आत्मनिर्भरता और पारंपरिक ज्ञान पर केंद्रित था। आधुनिक विश्वविद्यालयों में, स्वतंत्र शोध–परक संरचना एवं अनुसंधान संस्थान अधिक विस्तृत हैं, जिन पर बहुस्तरीय मानक और पारस्परिक अनुदान आधारित समर्थन मौजूद है।

इस प्रकार, तंत्र–आधारित तुलना के माध्यम से ज्ञात होता है कि नालंदा का शिक्षण तंत्र अधिक परंपरागत, केंद्रीकृत और व्यक्तिगत था, जबकि आधुनिक प्रणाली अधिक तकनीकी, सामाजिक रूप से विकसित, और स्वतंत्र अनुसंधान को आधार बनाती है। इन दोनों प्रणालियों के तंत्रिक ढाँचे की समीक्षा से ज्ञात होता है कि प्रत्येक का उद्देश्य और कार्यपद्धति विशिष्ट सामाजिक–शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अनुकूलित है, जिससे दोनों प्रणालियों के आपसी लाभ एवं सीमाओं को सम्मानित एवं समझा जा सकता है।

4.2. पाठ्यक्रम–विकास और अनुसंधान–संरचना

नालंदा विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम–विकास एवं अनुसंधान–संरचना के तुलनात्मक अध्ययन में दो प्रणालीगत दृष्टिकोणों के बीच स्पष्ट भिन्नताएँ देखी जा सकती हैं। प्राचीन नालंदा में अध्ययन का आधार सर्वप्रथम ग्राह्य तत्त्वों एवं मौलिक शिक्षण कार्यक्रमों पर केंद्रित था। यहाँ के पाठ्यक्रम एक स्थायी एवं परंपरागत आधार पर तैयार होते थे, जो धार्मिक और दार्शनिक विषयों के साथ–साथ विभिन्न विज्ञानों को समेटे रहते थे। इस प्रणाली में शिक्षकों की भूमिका मुख्यतः गुरु के रूप में थी, जो शिष्यों को ज्ञान के आंतरिक स्रोतों से जोड़ते थे। शोध भी मुख्यतः धर्म और दर्शन के संदर्भ में होता था, जिससे अध्ययन का मूल उद्देश्य व्यक्ति का आत्मिक और बौद्धिक विकास था।

वहीं, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में पाठ्यक्रम का विकास अधिक व्यापक एवं लचीला है। इसमें विभिन्न विज्ञान, तकनीकी, सामाजिक अध्ययन और मानविकी के क्षेत्र शामिल हैं। संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, अर्थशास्त्र जैसी विविध शाखाओं का समावेश होता है। पाठ्यक्रम निरंतर अनुसंधान एवं तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार विकसित होते रहते हैं। अकादमिक स्वतंत्रता एवं वैज्ञानिक अनुसंधान पर बल देना आधुनिक विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताएँ हैं, जिससे छात्रों और शोधार्थियों को नवीनतम ज्ञान एवं तकनीक तक पहुँच प्राप्त होती है। इस प्रणाली के अध्ययन कार्यक्रम अक्सर नियामक निकायों द्वारा निर्धारित मानकों और स्वीकृतियों के आधार पर तैयार किए जाते हैं, जिससे अध्ययन की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाती है।

अतिरिक्त रूप से, आधुनिक विश्वविद्यालय में अनुसंधान संरचना बहुस्तरीय एवं विविध क्षेत्रों में फैली होती है, जो भूगोल, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानविकी जैसे विविध विषयों में सृजनात्मकता एवं नवीनता को प्रोत्साहित करती है। शोध केंद्र एवं फेलोशिप कार्यक्रम संस्थान के शोध कार्यों को विशेष रूप से बल देते हैं। इस व्यवस्था में अनुसन्धान कार्यों का मुख्य उद्देश्य नए ज्ञान का सृजन एवं समाज के समक्ष उन्हें प्रस्तुत करना है। इन दोनों प्रणालियों के बीच मुख्य भिन्नता यह है कि जहां नालंदा का अध्ययन पथ अधिक पारंपरिक, धार्मिक एवं अनुष्ठान आधारित था, वहीं आधुनिक प्रणाली वैज्ञानिक एवं तकनीकी नवीनता पर केंद्रित है, जो वैश्वीकरण और टेक्नोलॉजी के युग में तेजी से विकसित हो रही है।

4.3. विद्यार्थी–समर्थन और सामाजिक समावेशन

नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का समग्र विकास एवं सामाजिक समावेशन अत्यंत महत्वपूर्ण थे। यहाँ पर विद्वान् शिक्षकों का प्रभावी मार्गदर्शन एवं छात्रों की सक्रिय भागीदारी पर बल दिया जाता था। विश्वविद्यालय के अध्ययनक्रमों में पारंपरिक ज्ञान के साथ–साथ नैतिक मूल्यों का समावेश होता था, जिससे विद्यार्थियों का सामाजिक एवं नैतिक चरित्र विकसित होता था। शिक्षण प्रक्रिया में छात्र–शिक्षक के बीच संवाद एवं सहयोग को प्राथमिकता दी जाती थी, जिससे अध्ययन का माहौल विविध पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के लिए सुलभ बनता था। इसके अलावा, सामाजिक समावेशन के दृष्टिकोण से नालंदा विश्वविद्यालय में सभी वर्ग एवं आयु के विद्यार्थियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया था। इसमें विशेष ध्यान था कि सामाजिक, आर्थिक और जातीय पृष्ठभूमियों से आए विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के शिक्षा प्राप्ति का अवसर मिले। उच्चतम स्तर के शोध एवं शिक्षण का उद्देश्य भी इसी समावेशन की अवधारणा को मजबूत करना था। वर्तमान विश्वविद्यालय प्रणाली में तकनीक एवं नीति के माध्यम से विद्यार्थियों की सहायता और सामाजिक समावेशन का स्तर सुधारात्मक प्रयासों के साथ बढ़ाया गया है। एक ओर जहाँ आधुनिक विश्वविद्यालयों में संरचनात्मक बाधाओं को दूर करने एवं समाज के वंचित वर्गों के लिए विशेष योजनाएँ बनाई जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर नालंदा की शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों का समग्र समर्थन एवं समाजिक समावेशन एक स्थायी एवं नैतिक मूलाधार का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार, दोनों प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन हमें शिक्षा के आधारभूत आध्यात्मिक एवं सामाजिक उद्देश्य को समझने में सहायता प्रदान करता है।

5. आधुनिककरण के आयाम और नालंदा मॉडल की प्रासंगिकता

आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में विभिन्न आयामों का समावेशन एवं विकसित आधुनिक प्रथाओं का आधार नालंदा मॉडल की शिक्षा पद्धति से प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। डिजिटलीकरण के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में पारदर्शिता और पहुंच में वृद्धि हुई है, जिससे छात्रों को विश्वस्तर पर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान होता है। इसके साथ ही, बहुभाषिक अध्ययन और वैकल्पिक विद्यापथ की स्थापना से विविध सामाजिक, भाषाई एवं सांस्कृतिक समूहों के अभ्यर्थियों को समान शैक्षणिक अवसर सुनिश्चित होते हैं। यहाँ परंपरागत शिक्षा के साथ–साथ नवीनतम शिक्षण उपकरणों एवं डिजिटल संसाधनों का समावेश अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

नालंदा मॉडल में विद्वत्तापरिषद् एवं गुरु–शिष्य परंपरा आधारित शिक्षण शैली ने रणनीतिक अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रभावशाली भूमिका निभाई। इस प्रणाली में नैतिक मानदंड एवं अकादमिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो आज के शैक्षणिक वातावरण में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। आधुनिक मोडलों में नैतिकता तथा नैतिक मानकों को शैक्षिक संस्थानों का आधार माना जाता है, जिससे पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व की स्थापना होती है।

इसके अतिरिक्त, नालंदा के शिक्षण दृष्टिकोण की सामंजस्यपूर्ण संरचना उत्कृष्ट शोध एवं प्रस्तुति का आधार बनी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय की प्रेरणा से शोध–परक शैक्षणिक रीतियों का प्रसार हुआ है। यह मॉडल शैक्षणिक मानकों और गुणवत्ता संरक्षण का आधार बनकर, उच्चतर शिक्षा में नवाचार एवं समावेशी विकास के लिए प्रोत्साहन प्रदान करता है। अतः, नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति का आधुनिककरण के आयामों से समन्वय स्थापित कर, शिक्षा के दीर्घकालिक एवं व्यापक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

5.1. डिजिटलीकरण और दूरस्थ शिक्षा

डिजिटलीकरण और दूरस्थ शिक्षा की प्रवृत्ति ने शैक्षणिक परिवेश में व्यापक परिवर्तन सुनिश्चित किया है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से अलग, आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर विद्यार्थियों को कहीं भी और कभी भी ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। इसकी शुरुआत डिजिटल मंचों, ई–लर्निंग प्लेटफार्मों और ऑनलाइन कोर्स के माध्यम से हुई, जिससे सूचनाओं का त्वरित आदान–प्रदान संभव हुआ है। नई तकनीकों ने शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद का दायरा विस्तृत किया है, जिससे शिक्षण का स्वरूप और पहुंच दोनों में गुणात्मक सुधार आया है।

दूरस्थ शिक्षा ने विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए आश्रय का कार्य निभाया है, जो दूरस्थ या वृहद् भौगोलिक क्षेत्रों में रहते हैं। आईटी आधारित शिक्षण प्रणालियों ने विद्यार्थियों को व्यक्तिगत गति से अध्ययन करने में समर्थ बनाया है, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमियों के छात्रों को समान अवसर प्रदान किया है। इसके फलस्वरूप, उच्च शिक्षण संस्थान भी अधिक समावेशी और विविधता पूर्ण हो गए हैं।

इसके साथ ही, डिजिटल शिक्षा ने संसाधनों की पहुँच को सरल और सस्ता बनाकर, नवीन अनुसंधान, डेटा विश्लेषण और शैक्षणिक सामग्री के प्रबंधन में तेजी लाई है। ऑनलाइन मूल्यांकन और विश्वसनीय प्रमाण–पत्र प्रणाली ने पारंपरिक परीक्षा प्रणालियों को पुनः परिभाषित किया है, जिससे शिक्षा का मानकीकरण और प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के प्रयास भी मजबूत हुए हैं। समग्रतः, डिजिटलीकरण और दूरस्थ शिक्षा शिक्षण की व्यापकता और प्रभावशीलता दोनों में अभिवृद्धि कर रहे हैं, जो आधुनिक समय की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

5.2. बहुभाषिक अध्ययन और वैकल्पिक विद्यापथ

बहुभाषिक अध्ययन एवं वैकल्पिक विद्यापथ का महत्त्व वर्तमान शैक्षणिक परिवेश में निरंतर बढ़ रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय ने प्राचीन काल में अनेक भाषाओं के अध्ययन को महत्व दिया, जिसने विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों एवं ज्ञान धाराओं से अवगत कराने का मार्ग प्रशस्त किया। इस पद्धति का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल एक भाषा तक सीमित रखने के बजाय अनेक भाषा–प्रवीणताओं में प्रविष्ट कराने का था, जिससे उनका संचार कौशल एवं बहुसांस्कृतिक समझ विकसित हो सके। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में भी बहुभाषिकता को उसकी शिक्षा की विश्वसनीयता एवं बहुपक्षीयता को बढ़ावा देने के लिए अपनाया जा रहा है। अनेक भाषा में पाठ्यक्रम एवं साहित्य उपलब्ध कराना, विदेशी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का सहयोग, तथा बहु–भाषाई शोध प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अतिरिक्त, वैकल्पिक विद्यापथ जैसे कि ऑनलाइन शिक्षा, स्वअध्ययन, योग्यता आधारित पाठ्यक्रम और क्षेत्रीय भाषाओं में अध्ययन विकल्प भी प्रभावी दृष्टि से विकसित किए गए हैं। इन माध्यमों से विद्यार्थियों को पारंपरिक कक्षाओं के अतिरिक्त अधिक लचीले एवं व्यक्तिगत अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है,

जो समकालीन शिक्षा की महत्वपूर्ण माँग है। इस तरह की पद्धतियों से न केवल शिक्षा का विस्तार एवं लोकतंत्रीकरण होता है, बल्कि यह वैश्वीकरण के युग में देश के ज्ञान–परंपरा को वैश्विक मंच पर परोक्ष रूप से प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनती हैं। अतः, बहुभाषिक अध्ययन एवं वैकल्पिक विद्यापथ का समावेश न सिर्फ प्राचीन शिक्षण पद्धति की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है, बल्कि आधुनिक विश्वविद्यालय की परिवर्तनशील आवश्यकताओं के अनुरूप भी एक समसामयिक समाधान प्रस्तुत करता है।

5.3. नैतिक मानदंड और अकादमिक सुरक्षा

नैतिक मानदंड और अकादमिक सुरक्षा का विषय आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में आधारशिला का कार्य करता है। इन मानदंडों का प्रवर्तन, विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के बीच विश्वास एवं सम्मान के परिसंघ को मजबूत बनाता है। नैतिक मानदंड में स्वतंत्र शोध का सम्मान, सूचना का गोपनीयता, तथा व्यावसायिक ईमानदारी जैसे तत्व शामिल हैं। अकादमिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं की निष्पक्षता, धोखाधड़ी रोकने हेतु तकनीकी उपाय, और भ्रष्टाचार के खिलाफ कठोर अनुशासनात्मक कदम अपनाए जाते हैं। यह मानवीय मूल्यों के साथ–साथ विधि–व्यवस्था की सुदृढ़ता से भी जुड़ा है, जिससे अनियमितताओं एवं अनैतिक गतिविधियों का समुचित दमन होता है। विश्वविद्यालयों में नैतिक शिक्षण और जागरूकता अभियानों का आयोजन, विद्यार्थी एवं संकाय सदस्यों में नैतिक भावना का विकास करना अनिवार्य है। इस प्रकार, नैतिक मानदंड और अकादमिक सुरक्षा न केवल एक व्यवस्थित प्रक्रिया हैं, बल्कि अकादमिक जीवन में नैतिकता के पालन की प्रतिबद्धता का भी प्रतीक हैं। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली इन प्रावधानों को संस्थान की व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाती है, जिससे शिक्षा का स्तर ऊँचा और विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है। इन मानदंडों का उचित प्रवर्तन समग्र शिक्षण एवं शोध के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के साथ ही समाज में विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को भी संजोता है।

6. नीति–निर्देशन और संस्थागत क्षमता

नीति–निर्देशन और संस्थागत क्षमता का निर्धारण विश्वविद्यालय की समुचित संचालन एवं स्थिरता के आधारस्तंभ हैं। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में नेतृत्त्व व्यवस्था एवं प्रशासनिक संरचना का आधार अध्यात्मिक और ज्ञान–संबंधी मान्यताओं तथा गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित था। इसमें विद्वानों के चयन और अध्ययन की प्रक्रिया स्वायत्त, पारंपरिक और गुरु–मुखी थी, जो संस्थान की स्वायत्तता एवं शोध की स्वतंत्रता को प्रवृत्त करती थी। इसके विपरीत, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में नीति निर्धारण का जिम्मा राज्य और शैक्षणिक परिषदों के हाथ में होता है, जिनके पास विस्तृत पुनर्निर्धारित नियमावली एवं वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था होती है। यह प्रणाली पारदर्शिता एवं मापदंडों पर आधारित होती है, जिनसे संस्थागत क्षमता का समुचित विकास सुनिश्चित किया जाता है। वित्तीय संसाधनों का प्रभावी आवंटन, स्थायी वित्तीय योजना और आंतरिक प्रशासन का मजबूत ढांचा संस्थान की दीर्घकालिक कुशलता एवं स्थिरता का मूल आधार है। इसके सुसंगत संचालन हेतु शासन का नीतिगत दृढ़ता और प्रतिबद्धता आवश्यक है, जिससे अनुशासन, मानवीय दक्षता, और नवाचार को प्रोत्साहन मिले। विविधतापूर्ण वित्त पोषण स्रोत, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, तथा गुणवत्ता मानकों का समुचित पालन संस्थान की प्रतिस्पर्धात्मकता और विश्वसनीयता को बनाए रखने में सहायक हैं। परिणामतः, नीति–निर्देशन का स्पष्ट ढांचा और मजबूत संस्थागत क्षमता नवीन ज्ञान का सृजन, अध्ययन और अनुसंधान की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है, जिससे शिक्षा व्यवस्था का सतत् विकास संभव हो पाता है।

6.1. शासन–निर्माण और फंडिंग–आर्किटेक्चर

नालंदा विश्वविद्यालय की शासन–निर्माण व्यवस्था और फंडिंग–आर्किटेक्चर स्थाई शासन प्रणाली एवं वित्तीय स्रोतों के सुव्यवस्थित प्रबंधन पर निर्भर थी। इसमें शासक वर्ग और महामंत्री जैसे अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण थी, जो शैक्षणिक संस्थान की नीतियों का निर्धारण करते थे। विश्वविद्यालय का शासन अधिकतर राज्याभिषेक पर आधारित था, जिसमें राजा का संरक्षण एवं समर्थन संस्थान की स्थिरता का मूल आधार था। इसके अलावा, शिक्षण एवं शोध गतिविधियों के वित्तपोषण के लिए स्थानीय एवं राजकीय स्रोतों का उपयोग किया जाता था। विधि व्यवस्था में स्वायत्तता का अभाव था, परंतु शिक्षकों एवं विद्वानों को कुछ स्वायत्तता प्रदान की जाती थी। इससे संरचना भले ही मजबूत थी, पर उसमें निर्णय प्रक्रिया केंद्रीय और केंद्रीकृत प्रकृति की थी। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में विधायी और वित्तीय स्वायत्तता अधिक विस्तृत और विविध स्वरूप की है। वहां शासन का ढांचा स्वतंत्र निकायों, बोर्डों और प्रशासनिक समितियों के माध्यम से स्थापित होता है, जिसके तहत वित्तीय स्रोतों का विविधीकरण और पारदर्शिता सुनिश्चित की जाती है। फंडिंग का स्रोत निजी संसाधन, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय सरकारें, वित्तीय अनुदान और अनुसंधान अनुदान हैं। इसके साथ ही, विश्वविद्यालयों के आर्थिक

संसाधनों का न्यायसंगत वितरण एवं प्रभावी प्रबंधन सरकार और संबंधित संस्थानों के सहकार्य से सुनिश्चित होता है। इस प्रणाली में शासन एवं फंडिंग का आधार पारदर्शिता, जवाबदेही एवं दीर्घकालीन स्थिरता है, जो अकादमिक उन्नति एवं स्थायी प्रगति के लिए अनिवार्य है। इस कारण से, नालंदा की परंपरागत व्यवस्थाओं की तुलना में आधुनिक संरचनाएं अधिक योजनाबद्ध और प्रभावशाली सिद्ध होती हैं।

6.2. अकादमिक मानक और गुणवत्ता–संरक्षण

अकादमिक मानक और गुणवत्ता–संरक्षण दोनों ही शिक्षण संस्थानों की प्रतिष्ठा और प्रभावशीलता निर्धारित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के अध्ययन काल में पारंपरिक मानकों का आधार अध्ययन सामग्री एवं शिक्षण पद्धति पर था, जहां विद्वानों की प्रमाणिकता एवं अनुभव प्रमुख मापदंड थे। वहीं, आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में मानकों का निर्धारण अधिकतर विश्वसनीयता, पारदर्शिता और तंत्रिक आधार पर किया जाता है। इसमें समीक्षक मंडल, परीक्षाएं, स्वायत्तता एवं मान्यता प्राप्त आयोगों का समावेश होता है, जो संस्थान की शैक्षणिक योग्यता का परीक्षण करते हैं और सुधार के अवसर प्रदान करते हैं। गुणवत्ता–संरक्षण का तंत्र निरंतर उच्च स्तर बनाए रखने हेतु आवश्यक है, जिसमें शिक्षण विधियों का मूल्यांकन, अनुसंधान की गुणवत्ता, विद्यार्थी के फीडबैक एवं औद्योगिक योगदान जैसी मापदंड शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि शिक्षा का स्तर न केवल मानकों के अनुरूप हो, बल्कि समय के साथ विकसित भी हो। अनुशासनिक मानदंडों का पालन, नैतिक मूल्यों का सम्मान और अध्यापन में नवीनता भी गुणवत्ता की स्थिरता एवं वृद्धि में सहायक हैं। आधुनिक प्रणाली में इन मानकों का अनिवार्य पालन डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्वचालित मूल्यांकन प्रणाली और नियमित ऑडिट के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है। इस प्रणाली का उद्देश्य न केवल शैक्षणिक प्रवृत्तियों की गुणवत्ता बनाए रखना है, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बालक एवं युवाओं का सर्वांगीण विकास भी है। अतः, विश्वसनीय एवं स्थिर शिक्षण गुणवत्ता का निर्धारण एवं संरक्षण, न केवल अकादमिक उत्कृष्टता की पहचान है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक समावेशन के लिए भी अनिवार्य आधार है।

6.3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और मानकीकरण

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और मानकीकरण की प्रक्रिया शिक्षण संस्थानों के वैश्विक मानकों और सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नालंदा विश्वविद्यालय की प्राचीन प्रणाली में विश्वव्यापी मानकों या मानकीकरण का प्रावधान स्पष्ट रूप से नहीं था, किंतु उसकी शिक्षण पद्धति आत्मनिर्भरता और स्थानीय संदर्भों के प्रति समर्पित थी। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली में, अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उद्देश्य ज्ञान के आदान–प्रदान, शोध सहयोग, और शैक्षणिक मानकों का समुचित निरूपण है। इससे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत को वैश्विक मान्यता प्राप्त होती है। विश्वभर में मानकीकरण के माध्यम से शिक्षा के मानकों को निर्धारित किया जाता है, जिससे शिक्षण गुणवत्ता, शोध की उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के अनुभव में समानता आती है। इन मानकों का पालन न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति को गति देता है, बल्कि नैतिक मानदंड और शैक्षणिक सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अंतर्गत, विश्वविद्यालयें संयुक्त शोध परियोजनाओं, छात्र और शिक्षक आदान–प्रदान कार्यक्रम, और वैश्विक परिसंघों में भागीदारी करती हैं। इससे सद्भावना एवं संपर्क स्थापित होते हैं, और नई शिक्षण विधियों का विकास होता है। मानकीकरण के पहलुओं में अकादमिक मानकों का विश्वसनीयता के साथ निर्धारित करना, शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक मूल्यांकन, और गुणवत्ता आश्वासन के अनुष्ठान शामिल हैं। इससे न केवल शिक्षण एवं अनुसंधान की उत्कृष्टता सुनिश्चित होती है, बल्कि विद्यार्थियों को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता भी बढ़ती है।

सामाजिक रूप से भी, मानकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रगति के लिए आवश्यक हैं। ये सुविधा प्रदान करते हैं कि उच्च शिक्षा का आदान–प्रदान बहुमुखी और समावेशी हो, जिससे सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान अवसर मिल सके। इस प्रकार, नालंदा की शिक्षण प्रणाली का तुलनात्मक दृष्टिकोण आधुनिक वैश्विक मानदंडों के साथ समेकित होकर, एक नियमित, पारस्परिक सम्मानित और उन्नत शैक्षणिक वातावरण का सृजन करता है, जो दीर्घकालिक विकास एवं सांस्कृतिक समृद्धि दोनों में सहायक है।

7. निष्कर्ष

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति एवं आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली के तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शिक्षण प्रक्रिया अधिक अध्ययन और शोध के आधार पर केंद्रित रही है, जिसमें विद्वतापरिषद् की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इसकी पाठ्यक्रम और शिक्षण प्रक्रियाएँ परंपरागत रूप से प्राचीन ग्रंथों और नीतियों के स्मरण और विवेचन पर आधारित थीं, जबकि वर्तमान प्रणाली में वैज्ञानिक,

व्यावहारिक और मूल्यांकन आधारित पद्धतियों का प्रचलन है। नालंदा में विद्वतापरिषद् और शोध केंद्र अत्यंत सुव्यवस्थित थे, जहाँ गुरु–शिष्य परंपरा ने अनुसंधान एवं अकादमिक संतुलन कायम किया। वहीं, आज के विश्वविद्यालय ख्यातिप्राप्त शोधकर्त्ता, प्रयोगशालाएँ, एवं स्वतंत्र अनुसंधान सुविधाओं का समर्थन करते हैं। विद्यार्थी अनुभव के संदर्भ में नालंदा का सामाजिक और शैक्षिक वातावरण अत्यंत सहयोगी व संस्कारित था, जबकि आधुनिक विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों हेतु बहुविषयी संलग्नता, अंतरराष्ट्रीय पहुंच और समावेशन की ओर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। दोनों प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि जबकि नालंदा की शिक्षा पद्धति में केंद्रित दृष्टिकोण थे, आधुनिक प्रणाली अधिक खुलापन, विविधता और तकनीकी नवाचार पर आधारित है। यह विश्लेषण स्थापित करता है कि समय के साथ शिक्षण व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है, और नालंदा की स्थिरता, नैतिकता एवं शोध संचयन के मॉडल से आधुनिक प्रणाली को नवीनतम तकनीकों, बहुभाषिकता और नैतिक मानकों के माध्यम से अनुकूलित किया जा सकता है। इन समन्वित प्रयत्नों से शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता में वृद्धि संभव है, तथा समेकित एवं समावेशी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची–

1. अल्तेकर. (1965). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति. वाराणसी नन्दकिशोर एंड ब्रदर्स।
2. राधाकृष्णन. (2008). भारतीय दर्शन (खंड 1). नई दिल्ली राजपाल एंड संस।
3. शर्मा. (2014). प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली ओरिएंट ब्लैकस्वान।
4. थापर. (2013). भारत का इतिहास. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन।
5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2020). भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और सुधार. नई दिल्ली यूजीसी प्रकाशन।
6. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली भारत सरकार।
7. मुखर्जी. (2011). प्राचीन भारत की शिक्षा और संस्कृति. पटना बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
8. नालंदा विश्वविद्यालय. (2022). नालंदा विश्वविद्यालय इतिहास और विरासत. राजगीर नालंदा विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. दत्त. (2009). बौद्ध शिक्षा और नालंदा परंपरा. कोलकाता संस्कृत पुस्तक भंडार।
10. यूनेस्को. (2016). विश्व धरोहर और नालंदा महाविहार का शैक्षिक महत्व. पेरिस यूनेस्को प्रकाशन।

Cite this Article

'डॉ0 यज्ञेश कुमार ', "नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति और आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."